भाजपा के दिन पूरे होने जा रहे, सिर्फ चुनावों का इंतज़ार

मनोज कुमार झा

जैसे-जैसे राजस्थान और मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव नजदीक आते जा रहे हैं, भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में हड़कंप की स्थिति बनती जा रही है। भाजपा के चाणक्य कहे जाने वाले अमित शाह की हालत भी पतली नजर आ रही है। सहयोगी शिवसेना द्वारा अपमानित किये जाने के बाद वे समर्थन के लिए फिल्मी सितारों के चक्कर लगा रहे हैं, पर फिल्मी सितारे वोट देने नहीं आते और न ही जनता पर उनका कोई राजनीतिक प्रभाव होता है। पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भी भरोसा फिल्मी सितारों पर रहा है। वे इस देश के पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने सितारों के साथ पतंग उड़ाई है और स्वच्छता अभियान का उन्हें ब्रांड एम्बेसडर बनाया है।

पर अब मोदी का आत्मविश्वास भी हिल उठा है। कर्नाटक के घटनाक्रम और राहुल गांधी की जन सभाओं में उमड़ती भीड़ से इनके हौसले पस्त होते नजर आ रहे हैं। अभी हाल में इन्होंने पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी को संघ के कार्यक्रम में बुलाया, पर प्रणब मुखर्जी ने वहां जाकर संघ की संकीर्ण विचारधारा के विरुद्ध ही भाषण दिया। इसके बाद संघ के आईटी सेल वालों ने फोटोशॉप का सहारा लेकर एक संघी के रूप में उनकी छवि बनानी चाही, पर लोगों ने संघ के फर्जीवाड़े को भली-भांति समझ लिया।

अब आम जन मानस में यह बात बैठती जा रही है कि भाजपा उनका भला करने वाली नहीं। वैसे तो इसके पहले कांग्रेस पर भी लोगों का भरोसा नहीं रहा था, पर अब लोग तुलना कर रहे हैं और कह रहे हैं कि कांग्रेस भाजपा से लाख दर्जा बेहतर थी। यानी इस बात की पूरी गुंजाइश है कि मध्य प्रदेश और राजस्थान में कांग्रेस की गठबंधन सरकारें बनेंगी। यहां एक सवाल है कि क्या कांग्रेस चुनाव पूर्व एक व्यापक मोर्चा बनाने के लिए तैयार है। यदि चुनाव पूर्व मोर्चा नहीं बनता तो कई तरह की समस्याएं पैदा होती हैं। विधायकों-सांसदों की खरीद-बिक्री की गुंजाइश हमेशा बनी रहती है। दूसरी बात, कांग्रेस नेतृत्व यानी राहुल गांधी और उनके मुख्य सलाहकारों को सोचना होगा कि 2019 में होने वाले आम चुनाव को लेकर वे कैसे रणनीति बनाएं। उन्हें भाजपा-विरोधी हर दल से संपर्क कर उन्हें साथ जोड़ना होगा, क्योंकि अब समय बहुत कम है। उन्हें गठबंधन बनाने के प्रयास में तेजी लानी होगी। समय रहते सबको जोड़ कर अखिल भारतीय स्तर के साथ-साथ क्षेत्रीय स्तर पर भी जहां जो दल ज्यादा प्रभावशाली है, वहां उसे स्वायत्तता देनी होगी।

उत्तर प्रदेश में ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि अखिलेश यादव और मायावती साथ आ सकती हैं। सपा, बसपा और कांग्रेस यदि यूपी में एक साथ मिल कर चुनाव लड़ते हैं तो भाजपा की मिट्टी पलीद हो जाएगी। यूपी में योगी के शासन से लोग त्राहि-त्रहि कर रहे हैं। पर वे मजबूर हैं, करें तो क्या करें। अभी उपचुनावों के जो संकेत आए हैं, वे पूरी तरह भाजपा के विरोध में हैं। लेकिन यदि कांग्रेस और अन्य दलों ने गठबंधन बनाने में सुस्ती दिखाई तो नुकसान भी हो सकता है। इसमें दो राय नहीं कि जनता किसी भी हाल में भाजपा के शासन से मुक्ति पाना चाहती है। लेकिन यदि समय पर विकल्प नहीं मिला तो वह लाचारी में यथास्थिति को स्वीकार करने को मजबूर होगी।

बिहार में राष्ट्रीय जनता दल के साथ कांग्रेस का स्वाभाविक समझौता है। बिहार भाजपा के विरोध का सबसे मजबूत दुर्ग था, पर नीतीश कुमार की सत्ता- लोलुपता के कारण भाजपा वहां पैठ बनाने में सफल हुई है। नीतीश कुमार का कोई ठिकाना नहीं है। ये एक पक्के अवसरवादी नेता हैं और पहले भी भाजपा के साथ जाने के बाद उसका साथ छोड़ चुके हैं। कोई शक नहीं, भाजपा की परिस्थितियां प्रतिकूल देख कर ये पाला बदल लें और भाजपा-विरोधी गठबंधन में शामिल हो जाएं। ऐसे में, इन्हें भी साथ लेने से कांग्रेस को गुरेज नहीं करना चाहिए। आपद धर्म के तहत जो भी भाजपा के विरोध में आए, उसे कांग्रेस को साथ जोड़ लेना चाहिए। जहां तक पश्चिम बंगाल का सवाल है, ममता बनर्जी ने भाजपाइयों को छठी का दूध याद करा दिया है। ममता भाजपाइयों से उनकी भाषा में ही बात कर रही हैं। यह गलत नहीं है। ममता भाजपा-विरोधी गठबंधन में शामिल होंगी, यह तय है, पर सवाल वामपंथियों का है कि वे क्या करेंगे। क्या वे ममता के साथ सामंजस्य स्थापित करेंगे या अलग-थलग रहने की नीति पर चलेंगे? इस सवाल का जवाब वामपंथियों को देना होगा। अभी तक वे 'गुलगुले खायेंगे और गुड़ से परहेज' की नीति पर चल रहे हैं और इसी का परिणाम है कि राष्ट्रीय राजनीति में उनकी जगह सिकुड़ती जा रही है। त्रिपुरा भी हाथ से निकल गया। केरल में इनकी वैचारिक अवस्थिति और नीतियां क्या हैं, ये भी सबको पता है। पश्चिम बंगाल में ये सिंगूर और नंदीग्राम की वजह से गये। सर्वहारा की पार्टी होने का दावा करने और पूंजीपतियों का खुल कर समर्थन करने का हश्र सामने आ गया। अब भी ये अपनी संकीर्णता को छोड़ कर व्यापक भाजपा-विरोधी मोर्चे में शामिल नहीं होते हैं तो ये पूरी तरह से अप्रासंगिक हो जाएंगे। काफी हद तक तो हो भी चुके हैं।

इस बीच, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक और शिगूफा छोड़ा है कि उनकी जान पर खतरा है और जिस तरह से पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की मानव बम से हत्या कर दी गई थी, उसी तरह उनकी हत्या की भी साजिश की जा रही है। कहा जा रहा है कि माओवादियों ने यह साजिश रची है और इस मामले में कुछ लोगों की धर-पकड़ भी की गई है। लेकिन जिस तरह से इस पूरे मामले को सामने लाया गया है, उससे जाहिर होता है कि इसमें कोई सच्चाई नहीं है, बल्कि लोगों का ध्यान बंटाने के लिए ऐसा किया गया है। जो भी हो, इस मामले की सच्चाई सुरक्षा और जांच एजेंसियों को पूरी तत्परता के सामने लानी चाहिए, अन्यथा जनता यही समझेगी कि 'भेड़िया आया, भेड़िया आया'। वैसे, भूलना नहीं चाहिए कि संघ का पूरा इतिहास ही साजिशों का इतिहास रहा है और साजिशों के परिणामस्वरूप ही यह सत्ता में आई है। पर लगता है, अब इसके दिन पूरे होने जा रहे हैं। जिस दिन भाजपा केंद्र की सत्ता से हटेगी, वह दिन ऐतिहासिक होगा, इसमें कोई दो राय नहीं है।

मोदी के 48 माह, 48 सवाल.....

1. चार शहरों के नाम बताओ जो स्मार्ट सिटी बने?
2. सांसदो के गोद लिए हुए चार गांवों के नाम बताओ जो आदर्श गांव बने?
3. चार जिलों के नाम बताओ जहां हर घर में शौचालय है?
4. चार जिलों के नाम बताओ जहां नया अस्पताल खुला?
5. चार राज्यों के नाम बताओ जहां एक हजार कि.मी. सडक बनी ?
6. चार बैंक शाखाओं के नाम बताओ जहां खोले गए जनधन के सारे खाते जीवित हैं?
7. चार देशों के नाम बताओ जहां से भारत में निवेश आ रहा हो?
8. चार ऐसे सेक्टर बताओ जहां एक लाख नौकरियां दी गई हो ?
9. चार प्रदेश बताओ जहां विद्धुत उत्पादन के नए संयन्त्र लगे ?
10. चार ऐसे केन्द्रीय मत्रियों के नाम बताओ जिनने अपने मंत्रालय से एक भी नयी योजना की सुरुआत की?
11. चार ऐसे शहरों के नाम बताओ जो पहले से ज्यादा स्वच्छ बने ?
12. चार ऐसे राज्य बताओ जहां किसान पहले आत्म हत्या करते थे अब नहीं कर रहे हैं?
13. चार कि.मी. का क्षेत्र बताओ जहां गंगा साफ हुई ?
14. चार लोगों के नाम बताओ जिन से काला धन बरामद हुआ?
15. चार घोटाले बाजों के नाम बताओ जिनको जेल पहुंचाया?
16. चार राज्यों के नाम बताओ जिनके सारे गावों में बिजली पहुंच गई ?
17. चार जिलों के नाम बताओ जिनमें नई सिंचाई योजनाओं का निर्माण शुरू किया?
18. चार अस्पतालों के नाम बताओ जहां सौ नए डाक्टर दिए?
19. चार ऐसे विभाग बताओ जहां से भ्रष्टाचार समाप्त हुआ?
20. चार सांसदों या विधायको के नाम बताओ जिनमें कोई दाग नहीं है ?
21. चार शहरों के नाम बताओ जहां महिलाऐं सुरक्षित हैं?
22. चार हप्तों के नाम बताओ जब आतंक की कोई घटना नहीं हुई ?
23. चार ऐसे महीने बताओ जब बलात्कार की कोई घटना नही हुई?
24. चार ऐसे राज्य बताओ जहां दलित/अल्पसंख्यकों का उत्पीडन नहीं हुआ?
25. चार महिलाओं के नाम बताओ जिनको शून्य रुपये में रसोई गैस दी गई?
26. चार खाद्य सामग्री के नाम बतायें जिनकी कीमत नही बढी ?
27. चार राज्यों के नाम बताओ जहां एक नई हवाई पट्टी बनी?
28. चार देश का पैसा लेकर भागे डिफाल्टरों के नाम बताएं जिनको वापस लाया जायेगा?
29. देश के चार खरब पतियों के नाम बताओ जिनके साथ सरकार के सम्बन्ध नहीं हैं?
30. चार ऐसे सैक्टर बताऐं जहां एफ़डीआई लागू नहीं हैं ?
31. चार ऐसे एटीएम बताऐं जहां महीने भर पैसे रहते हो ?
32. चार ऐसी तारीखें बतायें जब सीमा में कोई सैनिक शहीद नहीं हुआ ?
33. सरकार के चार ऐसे प्रवक्ताओं के नाम बताऐं जो हिन्दू मुस्लिम नहीं चिल्लाता हो ?
34. संसद के चार ऐसे सत्र बतायें जिनमें कामकाज हुवा हो?
35. चार केन्द्रीय मंत्रियों के नाम बतायें जो अपने मंत्रालय के फैसले खुद लेते हों?
36. चार उत्पादन क्षेत्रों के नाम बताऐं जिनमें निर्यात बढा हो ?
38. चार ऐसी विधान सभाओं के चुनाव प्रचार जहां सौ से कम मंत्री भेजे गऐ ?
39. चार ऐसे दिन बताऐं जब प्रधानमंत्री ने चार से कम बार कपडे बदले?
40. प्रधानमंत्री के चार ऐसे भाषण बतायें जिन में दस से कम झूठ बोले गये हों ?
41. प्रधानमंत्री की चार विदेश यात्रायें जिसमें देश का 35 करोड से कम खर्च हुआ हो?
42. प्रधानमंत्री की चार ऐसी चुनावी रेलियां बताये जिनमें बीस करोड से कम खर्च हुआ?
43. पैट्रोल डीजल से हर महीने होने वाली आय दो लाख तीस हजार करोड कहां गयी?
44. मात्र दो साल में बनकर तैयार सात सितारा बीजेपी कार्यालय निर्माण के लिए चार हजार तीन करोड कहां से आये ?
45. अमित शाह के बेटे का कारोबार एक साल में 80 हजार गुना कैसे बढा ?
46. बाबा रामदेव की सम्पत्ति तेरह हजार करोड से बढकर एक लाख तेईस हजार करोड़ कैसे हो गई?
47. मुकेश अम्बानी का मुनाफा पांच सौ साठ गुना कैसे हो गया?
48. आतंकवादियों को रमजान की एक महीने की छुट्टी दी गई. क्या अमरनाथ यात्रा में भी दी जायेगी ?

बिहार में सरकारी जमीन पर बसे दलित परिवार को झोपड़ी में बांधकर जिंदा जलाया

कटिहार (जन्ज्वार) दो बच्चियों की मौके पर मौत हो गयी, मां भी थोडी देर बाद मर गयी, पूरी तरह जल चुके पिता की जान बचनी लग रही है मुश्किल।

शासन—प्रशासन दलितों के हितों और उनका उत्पीड़न पर कठोर कार्रवाई किए जाने के दावे ही करते रह जाता है, और दूसरी तरफ उन्हें घर समेत जिंदा जला दिए जाने जैसी वीभत्स घटनाएं सामने आती रहती हैं।

बिहार के कटिहार जनपद स्थित आजमनगर थाना क्षेत्र में 10 जून की रात हुए एक जघन्य कांड में दलित परिवार को उसकी झोपड़ी में बंद कर जिंदा जला दिया गया। इस नृशंस हत्याकांड में दलित परिवार की दो बच्चियों की मौके पर की मौत हो गई और अपाहिज मां भी थोड़ी देर बाद मर गई, जबकि पिता बज्जन दास की हालत बहुत नाजुक बनी हुई, लगता नहीं कि उसकी भी जान बचे।

मीडिया में आई जानकारी के मुताबिक 10 जून की रात आजमनगर थाना इलाके में हुई इस वारदात का कारण भूमि विवाद है। मामले की छानबीन कर रही पुलिस ने अभी तक दो आरोपियों अब्दुल रहमान और उसकी पत्नी को गिरफ्तार किया है और अन्य हत्यारों की खोजबीन जारी है

शुरुआती छानबीन के बाद पुलिस ने बताया कि आजमनगर थाना क्षेत्र के घोरदा गांव में बज्जन दास गांव के ही एक चौक के समीप स्थित सरकारी जमीन पर चाय की दुकान चलाता था। इस जमीन को लेकर गांव के मुस्लिम समुदाय के लोगों से बज्जन दास का विवाद भी हुआ था।

शुरुआती जांच में यह भी सामने आया है कि बज्जन दास और मंजुला देवी को उक्त जमीन को लेकर गांव के ही मुज्लिम नामक व्यक्ति ने सरेआम धमकाया था कि अगर उन्होंने यह जमीन जल्दी खाली नहीं की तो वह उनकी परिवार समेत जान ले लेगा। 10 जून की रात करीब 12 बजे मुज्लिम ने ही बज्जन दास और मंजुला देवी की झोपड़ी पर ज्वलनशील पदार्थ छिड़ककर आग लगाई।

मामले की जांच कर रहे एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि 10 जून की रात कुछ दबंग लोगों ने इस महादलित परिवार को उस समय आग के हवाले कर दिया जब यह परिवार नींद के आगोश में था। कुछ लोगों ने घर का दरवाजा बाहर से बंद कर उस पर आग लगा दी। इस जघन्य कांड में बज्जन के दोनों बच्चों ढाई वर्षीय प्रीति और 5 वर्षीय किरण की मौके पर ही मौत हो गई।

गंभीर रूप से झुलसी बज्जन दास की पत्नी का भी अस्पताल में इलाज के दौरान निधन हो गया, जबकि बुरी तरह जल चुके बज्जन का अस्पताल में इलाज चल रहा है, वह भी बच पायेगा या नहीं कहना बहुत मुश्किल हैं। प्रत्यक्षदर्शियों का भी कहना है कि बज्जन का भी बचना नामुमकिन ही है।

जब बज्जन की झोपड़ी को आग के हवाले किया गया उसके थोड़ी देर बाद किसी ने मामले की सूचना पुलिस को दे दी थी, मौके पर पहुंची पुलिस बज्जन और उसकी पतनी बेटियों को अस्पताल ले गई। अस्पताल में बेटियों को तो डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया और इलाज के दौरान बज्जन की बीवी की भी मौत हो गई।

इस मामले की जांच कर रही पुलिस कहती है कि पहली नजर में मामला भूमि विवाद का लगता है। हम सभी कोणों से मामले की छानबीन कर रहे हैं। अब तक दो लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है, अन्य आरोपियों की तलाश जारी है।

मुस्लिम कट्टरपंथियों ने फिर मार डाला एक सेकुलर ब्लॉगर को

जनज्वार विशेष। 2013 से अब तक आधा दर्जन से अधिक उन सेकुलर ब्लॉगरों, प्रकाशकों की हत्या मुस्लिम कट्टरपंथी बंग्लादेश में कर चुके हैं, जो आधुनिकता, बराबरी और धर्मनिरपेक्षता के पैराकार रहे हैं।

बहुतायत मुस्लिम आबादी वाले देश बंग्लादेश में कट्टरपंथी ताकतें किस कदर हावी हैं, इसका अंदाजा एक के बाद एक सेकुलर ब्लॉगरों की हो रही हत्या से लगाया जा सकता है। बीते वर्षों में हर साल कम से कम एक चर्चित ब्लॉगर की हत्या का मामला बंग्लादेश से उजागर होता रहा है।

2013 से शुरू हुई ब्लॉगरों की हत्या का सिलसिला बताता है कि बंग्लोदश में आधुनिक मूल्य—मान्यताओं और खुलकर मुस्लिम धर्म की रूढ़ियों के खिलाफ लिखने—बोलने वालों और प्रचार—प्रसार करने वालों के लिए वहां लोकतांत्रिक माहौल नदारद है।

सोमवार, 11 जून की शाम को बंग्लादेश के मुंसीगंज जिले में वहां के चर्चित ब्लॉगर 60 वर्षीय शाहजहां बच्चू को पांच मोटरसाइकिल सवार हमलावरों ने दुकान से खींचकर गोली से मार डाला। शाहजहां बच्चू वारदात के वक्त एक दवा की दुकान में रोजा—इफ्तार के बाद अपने कुछ दोस्तों के साथ अपने गांव काकालड़ी के चौराहे पर गपशप कर रहे थे। शाहजहां बच्चू की हत्या उनके पैतृक गांव कालहालड़ी में ही हुई।

हमलावरों ने सबसे पहले लोगों को भगाने और दहशत फैलाने के मकसद से वहां देशी बम फोड़े और उसके बाद 60 वर्षीय शाहजहां को दुकान से बाहर निकालकर गोली मार दी। हालांकि अभी इस हत्या की जिम्मेदारी किसी कट्टरपंथी गिरोह ने नहीं ली है, बंग्लादेश पुलिस की आतंकवाद निरोधक शाखा किसी मुस्लिम अतिवादी संगठन का हाथ होने के संदेह पर जांच को आगे बढ़ा रही है।

शाहजहां बच्चू को लगातार फोन पर कट्टरपंथियों से धमकियां मिल रही थीं। वे बांग्लादेश कम्यूनिस्ट पार्टी में मुंसीगंज जिले के पूर्व जिला महासचिव भी रह चुके हैं। वह एक प्रकाशन भी चलाते रहे हैं, जिसका नाम 'बिशाखा प्रोकोशनी' है और बंग्लादेश की राजधानी ढाका के बंग्लाबाजार इलाके में है। वह अपने प्रकाशन से प्रगतिशील किताबों, खासकर कविताओं का प्रकाशन करते थे।

पुलिस का कहना है कि ऐसी हर हत्या की किसी न किसी मुस्लिम अतिवादी संगठनों ने जिम्मेदारी ली है। इससे पहले बंग्लादेश में करीब 6 प्रगतिशील पत्रकारों और लेखकों की हत्या हो चुकी है।

वर्ष 2016 में एलजीबीटी पत्रिका के वरिष्ठ संपादक रूपबान की अपहरण कर कट्टरपंथियों ने हत्या कर दी थी। उससे पहले वर्ष 2015 में एक के बाद एक 4 लेखकों—ब्लॉगरों की कट्टरपंथियों ने हत्या कर दी, जो आधुनिक सामाजिक मूल्यों के पक्षधर थे और मुस्लिम धर्म की बुराइयों पर खुलकर बोलते—लिखते थे। मारे गए लोगों में नास्तिक और ब्लॉगर निलॉय नील, वशीकुर रहमान, ब्लॉगर अविजित रॉय और प्रकाशक फैसला दीपन शामिल थे।